Think
IAS...

दृष्टि
The Vision

Think
Drishti

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC)

इतिहास (वैकल्पिक विषय)

प्राचीन भारत (भाग-1)

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: CSHS01

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC)

इतिहास (वैकल्पिक विषय)

प्राचीन भारत (भाग-1)

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष: 011-47532596, 87501 87501
टोल फ्री : **1800-121-6260**
Web: www.drishtiias.com
E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिए निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

UPSC DLP

विषय सूची (Contents)

1. इतिहास पर भूगोल का प्रभाव 5-12

2. भारतीय इतिहास के आरंभिक काल के अध्ययन के स्रोत एवं दृष्टिकोण 13-25

3. पाषाणकालीन संस्कृति 26-44

4. सिंधु घाटी सभ्यता 45-60

5. ताम्रपाषाण व महापाषाणकालीन संस्कृति 61-69

6. आर्य एवं वैदिक काल 70-85

7. महाजनपद काल/बुद्ध काल 86-100

8. ईरानी एवं मकदूनियाई (सिकंदर का) आक्रमण : कारण एवं प्रभाव 101-106

9. मौर्य साम्राज्य 107-132

अध्याय
1

इतिहास पर भूगोल का प्रभाव
(The Effect of Geography on History)

1.1 भौगोलिक विभाग 1.2 भौगोलिक परिवेश का इतिहास पर प्रभाव

इतिहास की उत्पत्ति, स्वरूप, विकास तथा अस्तित्व भौगोलिक परिस्थितियों पर ही अवलंबित है। प्रत्येक देश के निवासियों का रहन-सहन, वेश-भूषा, क्रिया-कलापों तथा सामाजिक एवं आर्थिक स्थितियों को वहाँ की भौगोलिक परिस्थितियाँ ही नियंत्रित करती हैं। भारत के इतिहास पर भी भारत की भौगोलिक स्थिति एवं प्राकृतिक बनावट का प्रभाव पड़ा है।

भारत एशिया महाद्वीप का एक खंड है। यह उत्तरी गोलार्द्ध में 8°4' और 37°6' अक्षांशों तथा 68°7' और 97°25' पूर्वी देशांतरों के मध्य स्थित है। प्राकृतिक दृष्टि से भारत की सीमाएँ सुरक्षा कवच का काम करती हैं। इसके उत्तर में हिमालय की ऊँची शृंखलाएँ हैं, जो पश्चिम से पूर्व की ओर फैली हुई हैं। इस पर्वतमाला ने भारत को एशिया-खंड के अन्य भागों से पूर्णत: पृथक् कर दिया है। पूर्व, दक्षिण तथा पश्चिम में यह (भारत) समुद्र द्वारा घिरा हुआ है। दक्षिण में गहरा हिंद महासागर है। पश्चिम में अरब सागर तथा पूर्व में बंगाल की खाड़ी फैली हुई है। अत: तीन ओर से भारत का विश्व के अन्य देशों के साथ प्राकृतिक संबंध नहीं है। इस प्रकार, प्रकृति ने भारत को एक विशाल दुर्ग के समान बनाया है, जो पर्वत शृंखलाओं और समुद्र से घिरा हुआ है।

1.1 भौगोलिक विभाग *(Geographical Sections)*

भारत को स्थूल रूप से चार प्राकृतिक भागों में बाँटा जाता है-

1. सीमांत के पर्वत प्रधान प्रदेश
2. गंगा, सिंधु और ब्रह्मपुत्र का वृहद् मैदान
3. विंध्य-मेखला और मध्य भारत का पठार
4. दक्षिणी भारत

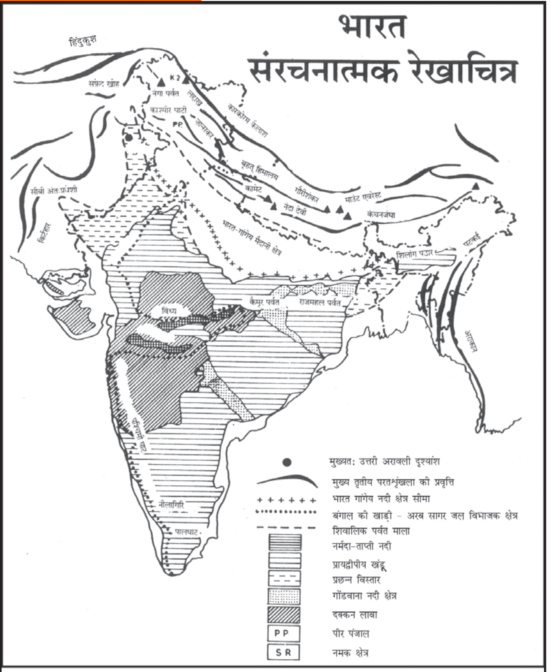

मानचित्र - 1

1. सीमांत के पर्वत प्रधान प्रदेश *(Hill Dominated Areas of the Frontier)*

भारत के उत्तर में स्थित हिमालय एक दीवार की भाँति फैला हुआ है। पश्चिम से पूर्व तक इस पर्वतमाला की लंबाई 2400 किलोमीटर है और चौड़ाई में यह 150 से 400 किलोमीटर तक है। इस पर्वतमाला में लगभग 114 शिखर ऐसे हैं जिनकी ऊँचाई 6000 मीटर से भी अधिक है। संसार का सर्वोच्च शिखर एवरेस्ट जिसकी ऊँचाई **8848 मीटर** है, इसी पर्वतमाला में है। अन्य शिखरों में गाडविन आस्टिन, कंचनजंघा, धौलागिरि और नंगा पर्वत मुख्य हैं।

- पामीर के दक्षिण-पश्चिम की ओर हिंदूकुश की पर्वतमाला है, जो भारत की पश्चिमोत्तरी सीमा है। यद्यपि इस प्रदेश का अधिकांश दक्षिणी-पूर्वी भाग आजकल अफगानिस्तान में सम्मिलित है, किंतु प्राचीन युग में वह राजनीतिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भारत का ही अंग था। हिंदूकुश की

में नहीं जम सकी। यही कारण है कि भारतीय शासकों ने सदैव रक्षात्मक युद्धों का सहारा लिया। बौद्ध धर्म और जैन धर्म की अहिंसावादी भावना के कारण भारतीय शासकों में साम्राज्यवादी भावना कुंठित हो गई थी। केवल राजेन्द्र चोल ने समुद्र पार के देशों को जीता था।

- भौगोलिक विभिन्नता के कारण भारत की विभिन्न जातियों के खान-पान, वेश-भूषा तथा रहन-सहन एक जैसा नहीं रह पाया। देश के कुछ भागों के निवासी चावल अधिक खाते हैं तो कुछ भागों में गेहूँ की रोटियाँ, कुछ भागों में बाजरे की रोटियाँ अधिक खाते हैं। कुछ जातियाँ माँसाहारी हैं तो कुछ शाकाहारी हैं। कुछ जातियों में छुआछूत का भेद अधिक है, तो किसी में कम। कुछ जातियों में विधवा-विवाह प्रचलित है तो कुछ जातियों में विधवा-विवाह वर्जित है। कोई जाति अध्यात्मवाद पर ज़ोर देती है तो कोई भौतिकवाद पर। इसी प्रकार, भिन्न-भिन्न भागों की जलवायु के अनुसार वेश-भूषा में भी अन्तर है। भारत की विभिन्न जातियों की भाषा, रूप-रंग, रीति-रिवाज़ और आचार-विचार में भी बड़ा अन्तर देखा जा सकता है।
- प्राकृतिक सुविधाओं के फलस्वरूप भारतीयों का जीवन वैभवपूर्ण रहा और उनमें से अनेक में बौद्धिक एवं आध्यात्मिक विकास की भावना जाग्रत् हुई। वे धार्मिक एवं दार्शनिक चिन्तन में लग गए। वस्तुत: आध्यात्मिकता का विकास प्राकृतिक सुविधाओं के कारण ही सम्भव हो पाया।
- पृथ्वी के विभिन्न भागों से पृथक् होने के कारण भारत में एक स्वतंत्र सभ्यता एवं संस्कृति का विकास हुआ जिसकी मुख्य विशेषता थी- ग्रहणशीलता अर्थात् संस्कृतियों को आत्मसात् करने की क्षमता। प्राचीनकाल से ही अनेक जातियाँ इस देश में आकर बसती रहीं। कुछ समय तक लूट-खसोट और मार-काट करती रहीं, परन्तु धीरे-धीरे भारतीयों में घुल-मिल गईं। बाहर से आने वाली विभिन्न संस्कृतियों के सम्मिलन से भारतीय संस्कृति एक नए रूप में विकसित हो उठी।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि भारत के भौगोलिक वातावरण एवं भौगोलिक परिस्थितियों ने भारतीय इतिहास को गंभीर रूप से प्रभावित किया।

दीर्घउत्तरीय प्रश्न

1. भौगोलिक कारकों की भारत के इतिहास तथा समाज पर प्रभावों की समीक्षा कीजिये।
2. भारत की उत्तर-पश्चिमी भौगोलिक परिस्थितियों का भारत के इतिहास तथा संस्कृति पर प्रभावों की समीक्षा कीजिये।
3. अनेक भौगोलिक विभागों में विभाजित होने के बावजूद भारत में एकता पाई जाती है। ऐतिहासिक उद्धरणों का उदाहरण देते हुए विवेचना कीजिये।

अध्याय 2

भारतीय इतिहास के आरंभिक काल के अध्ययन के स्त्रोत एवं दृष्टिकोण (Sources of Study and Approach of Early Period of Indian History)

2.1 प्राचीन भारतीय इतिहास के स्त्रोत
2.2 प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन एवं दृष्टिकोण

2.1 प्राचीन भारतीय इतिहास के स्त्रोत *(Sources of Ancient Indian History)*

प्रागैतिहासिक काल के इतिहास लेखन में इतिहासकार को पूरी तरह पुरातात्त्विक साधनों पर ही निर्भर रहना पड़ता है, जबकि आधुनिक इतिहास लेखन में वह साहित्यिक एवं पुरातात्त्विक दोनों साक्ष्यों का उपयोग करता है तथा इतिहास लेखन में वह उपरोक्त दोनों साधनों के अतिरिक्त विदेशियों के वर्णन का भी प्रयोग करता है।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से प्राचीन भारतीय इतिहास के स्त्रोतों को मुख्य रूप से दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है–

1. पुरातात्त्विक स्त्रोत
2. साहित्यिक स्त्रोत

1. पुरातात्त्विक स्त्रोत *(Archaeological Sources)*

प्राचीन भारत के अध्ययन में पुरातात्त्विक स्त्रोतों को विशेष महत्त्व प्राप्त है। इसके लिये तीन कारणों को प्रमुख माना जाता है–

प्रथम

चूँकि भारतीय ग्रंथों के रचनाकाल का हमें पूर्ण ज्ञान नहीं है, अत: उनके माध्यम से किसी काल विशेष की सामाजिक व आर्थिक स्थिति का विश्वसनीय ज्ञान प्राप्त नहीं हो पाता है।

द्वितीय

साहित्यिक स्त्रोतों में लेखक का दृष्टिकोण भी कई बार सही चित्र प्रस्तुत करने में असफल रहता है। उदाहरण के रूप में भारत आने वाले चीनी यात्रियों ने भारतीय समाज का वर्णन केवल बौद्ध दृष्टिकोण से ही किया, जिसके कारण उनके वर्णन द्वारा समाज की वास्तविक स्थिति का ज्ञान नहीं हो पाता है।

तृतीय

इतिहास के पुनर्लेखन के क्रम में कई इतिहासकारों ने अपनी इच्छानुसार या तो अनेक महत्त्वपूर्ण प्राचीन प्रकरणों को छोड़ दिया या फिर बिना सत्यता की पुष्टि किये हुए नए प्रकरणों को जोड़ दिया। जबकि पुरातात्त्विक स्त्रोतों में इस प्रकार के हेर-फेर की संभावना न के बराबर होती है, यही कारण है कि पुरातात्त्विक स्त्रोत अन्य साक्ष्यों की अपेक्षा अधिक विश्वसनीय माने जाते हैं।

पुरातत्त्व संबंधी सामग्री ने प्राचीन भारतीय इतिहास की जानकारी में विशेष सहायता प्रदान की है। इन सामग्रियों को पाँच भागों में बाँटा जा सकता है–

प्रागैतिहासिक काल: इस काल के बारे में कोई लिखित साक्ष्य उपलब्ध नहीं है तथा इस काल में मानव का जीवन भी तुलनात्मक रूप से सभ्य नहीं था।

आद्य ऐतिहासिक काल: प्राचीन भारत का वह समय जिसके लेखन कला के प्रमाण तो हैं किंतु उन्हें पढ़ा या समझा नहीं जा सका है, उदाहरण: हड़प्पा संस्कृति।

ऐतिहासिक काल: इतिहासकार उस काल को ऐतिहासिक काल मानते हैं जिसके लिखित साक्ष्य उपलब्ध हैं तथा मानव अब पूर्व कालों की अपेक्षा सभ्य हो गया था।

अध्याय
3

पाषाणकालीन संस्कृति (Stone Age Culture)

3.1 पुरा-पाषाणकालीन संस्कृति
3.2 मध्य-पाषाणकालीन संस्कृति
3.3 नव-पाषाणकालीन संस्कृति
3.4 पश्चिमी भारत की ताम्र-काँस्यकालीन संस्कृतियाँ

भारत में पाषाणकालीन सभ्यता का अनुसंधान 1863 ई. से प्रारंभ हुआ। सबसे पहले ब्रूसफूट नामक भू-वैज्ञानिक को मद्रास के निकट पल्लावरम् नामक स्थान पर पुरापाषाण काल का एक पाषाण निर्मित औज़ार प्राप्त हुआ। इसके पश्चात् विलियम किंग, ओल्डहम, काकर्बन हैकेट, वीन और ब्लैंफर्ड आदि विद्वानों ने भी अनेक पुरा-पाषाणकालीन सामग्रियाँ प्राप्त कीं। उन्नीसवीं सदी के अंत तक मद्रास, बंबई, मध्य प्रदेश, उड़ीसा, बिहार और उत्तर प्रदेश के प्रांतों तथा मैसूर, हैदराबाद, ऐनकानल, तालचेर और रीवा की रियासतों में अनेक पुरा-पाषाणकालीन स्थल (Sites) ढूंढ निकाले गए। सन् 1930 में माइल्स बर्किट नामक विद्वान ने दक्षिण के प्रदेशों में उपलब्ध औज़ारों की व्याख्या की और महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष निकाले। सबसे अधिक उल्लेखनीय अनुसंधान 1932-35 ई. में टैरा और पैटरसन के नेतृत्व में येल और कैंब्रिज विश्वविद्यालयों के विद्वानों के निरीक्षण में हुआ था। उन्होंने हिमालय के प्रदेश में पुरापाषाण काल के अनेक स्थलों की खोज की।

3.1 पुरा-पाषाणकालीन संस्कृति *(Culture of Palaeolithic Age)*

समस्त अनुसंधानों के परिणामस्वरूप बड़ी संख्या में विविध पुरा-पाषाणकालीन सामग्री उपलब्ध हुई, जिससे पता चलता है कि तत्कालीन मनुष्य या तो नदियों के तटों और झीलों के किनारों पर रहता था या पर्वत-कंदराओं में। विद्वानों का मत है कि भारत के प्राचीनतम पत्थर के औज़ार लगभग 4-5 लाख वर्ष पुराने होंगे।

स्टुअर्ट पिगॉट (Stuart Piggot) महोदय ने उत्तरी और दक्षिणी भारत के बहुसंख्य पाषाण उपकरणों का परीक्षण करके यह निष्कर्ष निकाला था कि तकनीक, के आधार पर उनमें स्थूल विभेद स्थापित किया जा सकता है। उत्तरी भारत में मुख्यत: 'फ्लेक प्रणाली' (Flake tradition) का प्रयोग हुआ था। इस प्रणाली के अंतर्गत पाषाण-खण्ड से छोटे-छोटे चप्पे छील लिये जाते थे और फिर उन्हीं चप्पों से हथियार एवं औज़ार बनाए जाते थे। दक्षिण में 'कोर प्रणाली' (Core tradition) प्रचलित रही, जिसके अन्तर्गत किसी पाषाण- खण्ड को ही छीलकर मनचाहे औज़ार तथा हथियार की आकृति दे दी जाती थी। अर्थात् मूल पाषाण-खण्ड से चप्पे नहीं निकालकर, स्वयं मूल पाषाण-खण्ड से ही औज़ार बना लिये जाते थे।

अनुक्रम और भौगोलिक विस्तार *(Sequence and Geographical Expansion)*

पुरापाषाण काल के अवशेषों और चिह्नों के आधार पर इस काल की सभ्यताओं को सुविधा की दृष्टि से पाँच भौगोलिक खण्डों में विभाजित किया जा सकता है- उत्तरी भारत, पश्चिमी भारत, मध्य भारत, पूर्वी भारत और दक्षिणी भारत।

(i) उत्तरी भारत

उत्तरी भारत में सबसे ऊपर कश्मीर की घाटी है, जहाँ इस बात के प्रमाण मिले हैं कि आज से लगभग 15,000 वर्ष पहले तक यह घाटी पूरी तरह हिम से ढकी हुई थी। 15,000 वर्ष पूर्व यह हिम पिघलना शुरू हुआ। इस क्षेत्र में पुरापाषाण काल की सभ्यता के अवशेषों तो कल्पना ही नहीं की जा सकती थी; फिर भी यह जानने की कोशिश की जाती रही कि यहाँ मनुष्य सबसे पहले कब बसा।

प्राक्-सोहन सभ्यता : दूसरी महत्त्वपूर्ण खोज सिन्धु और सोहन (सोआँ) नदी की घाटी के पोतवार क्षेत्र में हुई, जहाँ से पाषाण काल के औज़ार मिले। मरदान (अब पाकिस्तान में) के समीप संघाओं में एक गुफा निकली जिसके भीतर से मिले औज़ारों से वहाँ पाषाण काल की सभ्यता का बोध होता है।

अध्याय
4

सिंधु घाटी सभ्यता (Indus Valley Civilization)

4.1 उद्भव एवं विकास
4.2 सिंधु सभ्यता के विकास के विभिन्न चरण
4.3 सिंधु घाटी सभ्यता की विशेषताएँ
4.4 सिंधु घाटी सभ्यता की कला
4.5 सिंधु घाटी सभ्यता का पतन
4.6 सिंधु सभ्यता की देन

यह काँस्ययुगीन सभ्यता है जो ताम्रयुगीन और लौहयुगीन संस्कृति के बीच की संक्रमण स्थिति पर अवस्थित है। इस सभ्यता का काल C_{14} के आधार पर 2300–1750 ई.पू. माना जाता है। इसे हड़प्पा संस्कृति के नाम से भी जाना जाता है, क्योंकि इसका पता सबसे पहले 1921 में पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में अवस्थित हड़प्पा के आधुनिक स्थल से चला।

तिथिक्रम को निर्धारित करने वाले कारक

- स्तरीकरण
- कार्बन डेटिंग
- मुद्राओं के साक्ष्य
- विदेशी संपर्क
- वृक्ष विज्ञान (डेंड्रोलॉजी)

प्रसार-विस्तार: अपने परिपक्व काल में हड़प्पा संस्कृति का केंद्र पंजाब और सिंधु घाटी में पड़ता था। यहीं से इसका विस्तार दक्षिण और पूरब की ओर हुआ। इस प्रकार, हड़प्पा संस्कृति के अंतर्गत पंजाब, सिंध और बलूचिस्तान के भाग ही नहीं बल्कि गुजरात, राजस्थान, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के सीमांत भाग भी थे। उसका फैलाव उत्तर में जम्मू से दक्षिण में नर्मदा के मुहाने तक तथा पूर्व में आलमगीरपुर से लेकर पश्चिम में सुत्कागेंडोर तक विस्तृत था। संपूर्ण सभ्यता का विस्तार लगभग 12,99,600 वर्ग किलोमीटर रहा।

4.1 उद्भव एवं विकास *(Rise and Development)*

सिंधु सभ्यता के उद्भव को लेकर विद्वानों में मतभेद रहे हैं। इस मतभेद का आधार यह है कि उद्भव की प्रक्रिया को जानने में कई सारी व्यावहारिक समस्याएँ रहीं, जैसे- क्षैतिज उत्खनन का अभाव, ऊर्ध्वाधर उत्खनन भी सिर्फ जल स्तर के ऊपर तक हुआ है, अभी तक लिपि का न पढ़ा जाना तथा जानकारी के स्रोतों की सीमितता आदि।

सिंधु सभ्यता के उद्भव के संदर्भ में दो मत सामने आते हैं। विद्वानों का एक वर्ग मानता है कि इस सभ्यता की उत्पत्ति विदेशी प्रभाव से हुई तथा दूसरा वर्ग मानता है कि इस सभ्यता की उत्पत्ति स्थानीय या देशी प्रभाव से हुई है।

विदेशी प्रभाव

गार्डन चाइल्ड, मार्टीमर ह्वीलर, क्रेमर, डी.डी. कौशांबी आदि इतिहासकार सिंधु सभ्यता के उद्भव में विदेशी प्रभाव को स्वीकार करते हैं। इनका विचार है कि सिंधु सभ्यता का उद्भव मेसोपोटामिया की देन है।

(i) **गार्डन चाइल्ड :** "यह सोचना असंभव है कि ग्राम्य संस्कृति से हड़प्पा के नगरों का विकास हुआ। स्वयं मेसोपोटामियाई भारत आए और यहाँ की जलवायु के अनुरूप अपनी मूल नगरीय संरचना में परिवर्तन करके हड़प्पा सभ्यता को जन्म दिया।"

अध्याय
5

ताम्रपाषाण व महापाषाणकालीन संस्कृति (Chalcolithic and Megalithic Culture)

5.1 सिंधु से बाहर पशुचारण एवं कृषि संस्कृतियों का विस्तार   5.2 महापाषाण काल

5.1 सिंधु से बाहर पशुचारण एवं कृषि संस्कृतियों का विस्तार
(Distribution of Pastoral and Farming Cultures Outside the Indus)

यदि हम परवर्ती हड़प्पा चरण में भारतीय उपमहाद्वीप का अवलोकन करें तो यह ज्ञात होता है कि हड़प्पा सभ्यता के वितरण क्षेत्र में इस सभ्यता का अंत हो जाने पर अनेक क्षेत्रीय संस्कृतियाँ अस्तित्व में आती हैं। इस तरह की क्षेत्रीय संस्कृति में सिंधु में झूकर-झाकर (Jhukar-Jhankar) संस्कृति, पश्चिमी पंजाब व बहावलपुर में क्रबिस्तान एच संस्कृति (सिमेट्री एच कल्चर), गुजरात में लाल-चमकीले मृद्भांड संस्कृति तथा गंगा दोआब में गैरिक मृद्भांड संस्कृति की पहचान की जाती है। यदि हम सिंधु घाटी सभ्यता के विस्तार की परिधि के बाहर अवलोकन करें तो देश के शेष भागों में हमारा सामना अनेक कृषि संस्कृतियों से होता है।

यदि इन कृषि संस्कृतियों के भौगोलिक विस्तार पर दृष्टिपात किया जाए तो हमें ज्ञात होता है कि मुख्य रूप से ये दक्षिणी-पूर्वी राजस्थान (अहार संस्कृति), पश्चिमी मध्य प्रदेश (कायथा एवं मालवा संस्कृति), पश्चिमी महाराष्ट्र (जोर्वे संस्कृति) तथा गुजरात के पश्चिमी भाग व तटीय इलाकों (रंगपुर व प्रभास संस्कृति) में विस्तृत थीं। मोटे तौर पर इसे उत्तर में विंध्य से लेकर दक्षिण में कृष्णा नदी तक माना जा सकता है। इन कृषक संस्कृतियों की निम्नलिखित विशेषताएँ सामने आती हैं–

1. ये सभी कृषक संस्कृतियाँ अपने स्वरूप में ग्रामीण थीं तथा इनकी पहचान चाक पर बने उत्कृष्ट चित्रित मृद्भांड से होती है।
2. ये सभी प्रदेश उपजाऊ काली मिट्टी वाले क्षेत्रों में विद्यमान थे। ऐसा माना जाता है कि उपजाऊ काली मिट्टी ने ही इसके विकास का आधार तैयार किया था।
3. इस संस्कृति के लोग परिष्कृत पाषाण उपकरणों का प्रयोग करते थे तथा प्रस्तर फलक उद्योग निस्संदेह ही विकसित था। ये लोग तांबे के उपयोग से भी परिचित थे। धातुओं के रूप में तांबा का प्रयोग मुख्य रूप से होता था। पत्थर और तांबे के साथ-साथ उपयोग के कारण इस काल को कैल्कोलिथिक (Chalcolitic) युग भी कहा जाता था, जिसका अर्थ है तांबे और पत्थर के प्रयोग की अवस्था। इस कारण से हम इन्हें विकसित ताम्रपाषाणकालीन कृषक संस्कृतियों के नाम से भी जानते हैं।

ताम्रपाषाणकालीन कृषि संस्कृतियों की बस्तियाँ
(Settlements of Farming Cultures in Chalcolithic Age)

1. **दक्षिणी-पूर्वी राजस्थान में अहार/अहाड़ संस्कृति (2100–1500 BC):** दक्षिण-पूर्वी राजस्थान में उत्खनन से **अहार** व **गिलुंद** दो महत्त्वपूर्ण ताम्रपाषाणकालीन स्थल प्रकाश में आए हैं। अहार आधुनिक उदयपुर के निकट अवस्थित था तथा इसी स्थल को केंद्र में रखकर इस संपूर्ण क्षेत्र की संस्कृति को अहार संस्कृति का नाम दिया जाता है। चूँकि यह क्षेत्र बनास नदी घाटी में भी अवस्थित था, इस कारण से इसे बनास संस्कृति के नाम से भी जाना जाता है।

   अहार का टीला 1500 × 800 फीट तथा अन्य एक महत्त्वपूर्ण स्थान गिलुंद का टीला 1500 × 700 फीट का है। यहाँ की बस्तियों की गृह निर्माण योजना स्पष्ट नहीं है। सामान्यत: साधारण घर गोलाकार होते थे, जिनके निर्माण में गारे, पत्थर तथा बाँस आदि का इस्तेमाल होता था। आश्चर्यजनक रूप से गिलुंद से 1500 ई.पू. के आस-पास पक्की ईंटों के इस्तेमाल होने का साक्ष्य मिलता है, किंतु इसका प्रयोग यदा-कदा ही होता होगा।

अध्याय
6

आर्य एवं वैदिक काल
(Aryans & Vedic Period)

6.1 आर्यों का मूल निवास स्थान	6.6 सामाजिक संरचना
6.2 भारत में आर्यों का प्रसार	6.7 आर्थिक संरचना
6.3 वैदिक साहित्य	6.8 आर्यों का धार्मिक विश्वास
6.4 चित्रित धूसर मृद्भांड संस्कृति	6.9 सिंधु सभ्यता एवं वैदिक संस्कृति की तुलना
6.5 राजनीतिक संरचना	6.10 वर्ण व्यवस्था का क्रम विकास

वैदिक काल (1500 ई.पू.-600 ई.पू.) के अंतर्गत वेदों के समय से लेकर सूत्रकाल तक के भारतीय समाज एवं संस्कृति का अध्ययन वैदिक ग्रंथों के आलोक में किया जाता है। अध्ययन की सुविधा के लिये इस काल को निम्नलिखित बिंदुओं में विभाजित किया जा सकता है—

1. आर्यों का मूल निवास स्थान
2. भारत में आर्यों का प्रसार
3. वैदिक साहित्य
4. चित्रित धूसर मृद्भांड संस्कृति
5. आर्यों की राजनीतिक संरचना
6. आर्यों की सामाजिक संरचना
7. आर्यों की आर्थिक संरचना
8. धार्मिक विश्वास
9. सिंधु सभ्यता एवं वैदिक संस्कृति में अंतर आदि।
10. वर्ण व्यवस्था का क्रम विकास

6.1 आर्यों का मूल निवास स्थान *(The Original Home of Aryans)*

आर्यों के मूल निवास स्थान को लेकर विद्वानों ने अलग-अलग मत व्यक्त किये हैं। इनमें से विद्वानों का एक वर्ग आर्यों का आदिदेश विदेश (मध्य एशिया) मानता है, तो दूसरा वर्ग भारत को मानता है।

(i) आर्य विदेशी मूल के थे - पक्ष में तर्क

- **फिलिप सेसेट्टी, विलियम जोंस** आदि ने आर्यों का मूल निवास स्थान **यूरोप** को बताया है। उन्होंने संस्कृत व यूरोपीय भाषाओं में साम्यता के आधार पर यूरोप को ही आर्यों का देश माना। संस्कृत में पिता को पितृ तो लैटिन में पेटर तथा अंग्रेज़ी में फादर कहा गया है जो एक-दूसरे से मिलते-जुलते हैं।
- **पी. गाइल्स** ने भाषा के स्थान पर वनस्पतिशास्त्र एवं समान नस्ल के पशु-पक्षियों के आधार पर आर्यों का आदिदेश यूरोप को माना है।

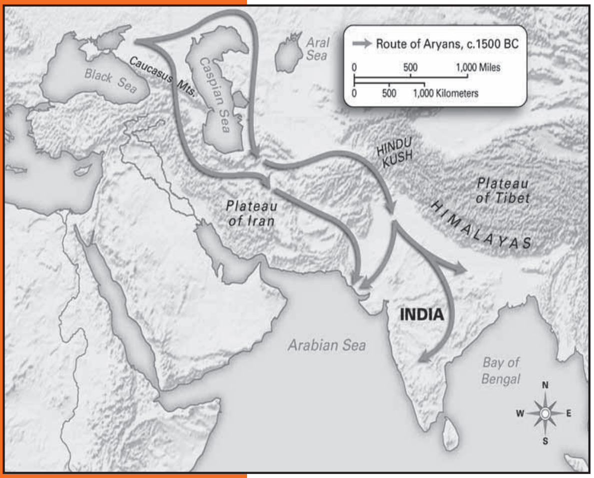

- यूरोप को आर्यों का मूल निवास स्थान मानने में अनेक कठिनाइयाँ हैं - भाषा संबंधी एकरूपता निश्चित तौर पर यह प्रमाणित नहीं करती कि आर्य यूरोप में ही रहते थे। लंबे समय से एक साथ रहने से भाषा संबंधी समानता विभिन्न जातियों में हो सकती है परन्तु यूरोपीय भाषा में ऐसा कोई ग्रंथ नहीं है जो वेदों के समकालीन हो।
- **तिलक** ने आर्यों का आदिदेश **आर्कटिक प्रदेश** को माना है। उनका यह निष्कर्ष ऋग्वेद और जेंद अवेस्ता में वर्णित भौगोलिक साक्ष्यों पर आधारित है। तिलक के अनुसार इस क्षेत्र में भयंकर हिमपात होता था। फलत: परिस्थितियों से बाध्य होकर आर्यों को यह क्षेत्र छोड़ना

अध्याय
7

महाजनपद काल/बुद्ध काल
(Mahajanpada Age/Buddha Age)

7.1 राज्य निर्माण के प्रारंभिक चरण	7.4 महाजनपदकालीन सामाजिक दशा
7.2 मगध साम्राज्य व महाजनपदकालीन राजनीतिक दशा	7.5 नवीन धर्मों का उदय : जैन और बौद्ध धर्म
7.3 महाजनपदकालीन आर्थिक दशा	7.6 द्वितीय नगरीकरण

भारत ही नहीं समस्त विश्व के इतिहास में छठी शताब्दी ई.पू. का युग बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस शताब्दी में सर्वत्र एक नई चेतना का उदय हुआ, मानो मनुष्य जाति ने बाल्यावस्था से युवावस्था में पदार्पण किया हो। भारत में इस शताब्दी में सभी क्षेत्रों में अभूतपूर्व प्रगति हुई। यहाँ **राज्यों के निर्माण की प्रक्रिया** शुरू हुई और **मगध साम्राज्य की नींव** पड़ी। धार्मिक दृष्टि से यह काल क्रांति का युग था। **नवीन धर्मों, यथा- बौद्ध एवं जैन धर्म का उदय** इसी काल में हुआ। आर्थिक दृष्टि से भी यह क्रांति का युग था, फलतः **द्वितीय नगरीकरण** की प्रक्रिया भी इसी काल में सामने आई। भाषा की दृष्टि से वैदिक संस्कृत के स्थान पर **लोक भाषाओं का उद्भव हुआ** और इसी काल में सामाजिक-धार्मिक स्थिति के नियमन हेतु 'सूत्र साहित्य' की रचना हुई। इस बहुमुखी विकास के कारण ही इस काल का भारत के इतिहास में विशिष्ट स्थान है।

7.1 राज्य निर्माण के प्रारंभिक चरण
(Primary Stages of State Formation)

राज्य निर्माण की प्रक्रिया एक क्रमिक विकास को अनुरेखित करती है। यह विकास ऋग्वैदिक काल से आरंभ होकर अपने चरम रूप में मगध साम्राज्य में परिलक्षित होता है। ऋग्वैदिक काल एक कबीलाई स्वरूप लिये हुए था। उनके अपने कबीले होते थे और कबीलों का नेतृत्व करने वाला मुखिया या राजा कहा जाता था। कुल मिलाकर छोटे-छोटे कबीलों से ही राजा की पहचान थी और ये कबीले **जन** कहलाते थे। आगे उत्तरवैदिक काल में इस जन का विकास **जनपद** के रूप में हुआ और भूमि स्वामित्व की अवधारणा पहली बार सामने आई। क्षेत्र विशेष पर राजा का अधिकार था और इसी क्षेत्र के विस्तार एवं प्रसार के लिये राजा सदैव प्रयत्नशील रहता था। फलतः कई जनपदों को विजित कर अपने राज्य में सम्मिलित किया गया। इस प्रकार **महाजनपदों का उदय छठी शताब्दी ई.पू. में हुआ**। वस्तुतः प्रारंभिक राज्यों का निर्माण महाजनपदों के उद्भव से संबंध रखता है।

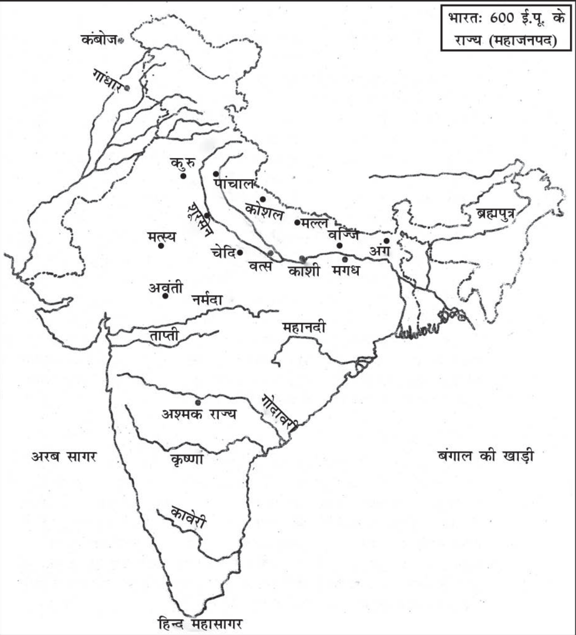

- इस काल में **लोहे का प्रयोग** 'कृषि' में होने लगा। दूसरी तरफ धान रोपाई की तकनीक का विकास हुआ। फलतः कृषि उत्पादन में वृद्धि एवं अधिशेष के साथ-साथ जनसंख्या में भी वृद्धि हुई।
- अब आर्य एवं अनार्यों के बीच संपर्क बढ़ा और वृहत्तर प्रादेशिक इकाइयों का विकास हुआ। इन प्रादेशिक इकाइयों में महत्त्वपूर्ण सामाजिक एवं राजनीतिक परिवर्तन हुए। फलतः 16 महाजनपदों का उदय हुआ।
- राज्य के मज़बूत आर्थिक आधार का विकास हुआ। करारोपण प्रणाली की स्थापना हुई। **भाग**, **कर**, **बलि** आदि राज्य की आय के महत्त्वपूर्ण स्रोत थे। **भागदुध** नामक अधिकारी करारोपण से संबद्ध था। इसी काल में सर्वप्रथम भूमि की माप शुरू हुई जिससे जुड़ा हुआ अधिकारी '**रज्जुग्राहक**' था।

अध्याय 8

ईरानी एवं मकदूनियाई (सिकंदर का) आक्रमण : कारण एवं प्रभाव
(Iranian and Macedonian (Alexander's) Invasion: Causes and Impacts)

8.1 ईरानी आक्रमण एवं प्रभाव
8.2 सिकंदर (मकदूनियाई) के आक्रमण के कारण एवं प्रभाव

8.1 ईरानी आक्रमण एवं प्रभाव
(Iranian Invasion and its Impacts)

छठी शताब्दी ई.पू. के मध्य में साइरस-II ने ईरान में हखमनी वंश की स्थापना की। साइरस-II के नेतृत्व में शीघ्र ही हखमनी वंश पश्चिमी एशिया का सर्वाधिक शक्तिशाली वंश बन गया। उसके साम्राज्य की पूर्वी सीमा भारत को स्पर्श करने लगी। साइरस-II एक महत्त्वाकांक्षी शासक था तथा उसने विस्तार व धन लाभ की अदम्य इच्छा की पूर्ति के लिये भारतीय उपमहाद्वीप पर सैन्य अभियान करने का निश्चय किया।

ईरानी आक्रमण के समय उत्तर-पश्चिम भारत की राजनीतिक परिस्थितियाँ

ईरानी आक्रमण के समय उत्तर-पश्चिमी भारत में बहुपक्षीय राज्य विद्यमान थे। मध्य भारत में जहाँ मगध साम्राज्य जैसे शक्तिशाली राज्य स्थापित थे, वहीं इस क्षेत्र में कम्बोज, गांधार व मद्र जैसे छोटे राज्यों का शासन था। फिर इन क्षेत्रों में कोई ऐसी सार्वभौम शक्ति नहीं थी जो परस्पर संघर्षरत राज्यों को जीतकर एकच्छत्र शासन के अंतर्गत संगठित कर सकती थी। इसके विपरीत इन राज्यों में निरंतर आपसी संघर्ष होते रहते थे। यह संपूर्ण प्रदेश उस समय कई राज्यों में विभाजित था। यह स्थिति साइरस के भारत पर आक्रमण करने के लिये अनुकूल थी।

डेरियस-I का सैन्य अभियान

- यूनानी लेखक निर्याकस एवं मेगास्थनीज के अनुसार साइरस ने कभी भी भारत पर आक्रमण नहीं किया था। किंतु यूनानी लेखकों का यह मत मान्य नहीं है। साइरस के बारे में ऐसा माना जाता है कि उसने अपने आरंभिक सैन्य अभियान में हिन्दूकुश पर्वत के दक्षिण-पूर्व में स्थित कपिशा को जीतने में सफलता प्राप्त की। रोमन लेखक प्लिनी के विवरण से भी ज्ञात होता है कि साइरस-II ने कपिशा नगरी को ध्वस्त किया था। किंतु साइरस-II ने भारत पर कोई बड़ा सैन्य अभियान नहीं किया था। सर्वप्रथम डेरियस-I ने 516 ई.पू. के आस-पास भारत में एक बड़ा सैन्य अभियान संपन्न किया था।
- डेरियस-I ने अपने सैन्य अभियान में पंजाब के सिंधु नदी के पश्चिमी क्षेत्र तक के प्रदेशों को जीतने में सफलता प्राप्त की थी। इसकी इस सफलता की पुष्टि यूनानी इतिहासकारों के विवरण व बेहिस्तुन अभिलेख से होती है। यूनानी इतिहासकार हेरोडोटस (Herodotus) के विवरण से यह ज्ञात होता है कि सिंधु नदी के आस-पास का इलाका डेरियस-I का 20वाँ और सबसे समृद्ध प्रांत था। इस समय के फारस साम्राज्य में कुल 28 प्रांत थे तथा हेरोडोटस के अनुसार इसके 20वें भारतीय प्रांत से 300 टैलेंट (प्राचीन ग्रीक में भार की इकाई) सोना प्राप्त होता था। डेरियस-I के बेहिस्तुन अभिलेख से यह भी ज्ञात होता है कि गांधार, हरवती तथा मका (बलूचिस्तान का मकरान तट) आदि इसके साम्राज्य के अभिन्न अंग थे।

अध्याय
9

मौर्य साम्राज्य
(Maurya Empire)

9.1 मौर्य साम्राज्य के अध्ययन के स्रोत
9.2 मौर्य साम्राज्य का विस्तार
9.3 मौर्यकालीन समाज
9.4 मौर्यकालीन अर्थव्यवस्था
9.5 मौर्य प्रशासन
9.6 मौर्य राज्य की प्रकृति/स्वरूप
9.7 अशोक का धम्म
9.8 अशोक के प्रशासनिक सुधार एवं जनकल्याणकारी कार्य
9.9 अशोक की महानता के विभिन्न पक्ष
9.10 मौर्यों की विदेश नीति
9.11 मौर्य साम्राज्य के विघटन के कारण

9.1 मौर्य साम्राज्य के अध्ययन के स्रोत
(Sources of Study of Maurya Empire)

मौर्य साम्राज्य के इतिहास के पुनर्निर्माण के लिये साहित्यिक एवं पुरातात्त्विक स्रोतों की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। एक तरफ जहाँ इन स्रोतों से मौर्यकालीन इतिहास पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है, वहीं दूसरी तरफ कुछ भ्रामक तस्वीरें भी उभरकर सामने आती हैं। अत: मौर्यकालीन इतिहास के पुनर्निर्माण में इन स्रोतों का अध्ययन सावधानीपूर्वक करने की ज़रूरत है।

मौर्यकालीन इतिहास साहित्यिक व पुरातात्त्विक दोनों ही साधनों से जाना जाता है। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से साहित्यिक स्रोतों को दो भागों में बाँट सकते हैं- देशी एवं विदेशी।

1. देशी साहित्य *(Indigenous Literature)*

इसके अंतर्गत ग्रंथों को पुन: दो भागों में बाँट सकते हैं- धार्मिक एवं धर्मनिरपेक्ष ग्रंथ। धार्मिक ग्रंथ के अंतर्गत बौद्ध, जैन एवं ब्राह्मण ग्रंथ आते हैं।

- **बौद्ध ग्रंथ :** बौद्ध ग्रंथों – दीपवंश, महावंश, दिव्यावदान, मिलिन्दपहों इत्यादि से मौर्यकालीन इतिहास पर प्रकाश पड़ता है। अशोकवदान से अशोक की जीवनी एवं बौद्ध धर्म के प्रति उसके लगाव का पता चलता है। मिलिन्दपन्हों में मगध की सेना के विनाश का वर्णन मिलता है। बौद्ध साहित्य से मौर्यों के क्षत्रिय कुल के होने की सूचना प्राप्त होती है।
- **जैन साहित्य :** जैन ग्रंथ 'परिशिष्टपर्वन' में चंद्रगुप्त मौर्य तथा नंद शासक के संघर्ष का उल्लेख है। 'भद्रबाहु चरित' से चंद्रगुप्त के जीवन के अंतिम समय का पता चलता है।
- **ब्राह्मण साहित्य :** 'विष्णु पुराण' से मौर्यों के विषय में जानकारी मिलती है। इसमें मौर्यों को निम्न कुल का बताया गया है। इन ब्राह्मण ग्रंथों एवं इनकी टीकाओं से मौर्यकाल की सामाजिक व आर्थिक दशा पर प्रकाश पड़ता है।
- **धर्मनिरपेक्ष साहित्य :** कौटिल्य के अर्थशास्त्र से मौर्यकालीन राजनीतिक, प्रशासनिक, आर्थिक और सामाजिक दशा पर विशेष प्रकाश पड़ता है। इसमें राज्य की उत्पत्ति, राजा के अधिकार एवं कर्त्तव्य, गुप्तचर एवं न्याय व्यवस्था, राजकोषीय नीति आदि विषयों की जानकारी मिलती है।

विशाखदत्त कृत **मुद्राराक्षस** से चंद्रगुप्त मौर्य एवं चाणक्य के संबंधों पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। इससे नंद वंश के पतन एवं चंद्रगुप्त मौर्य के उत्थान के घटनाक्रम का विवरण मिलता है। बाणभट्ट के 'हर्षचरित' से मौर्यों की अवनति के समय के बारे में जानकारी मिलती है तो कल्हण की 'राजतरंगिणी' से अशोक और उसके उत्तराधिकारियों का विवरण मिलता है।

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी, फ्लोचार्ट तथा मानचित्र का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS

YouTube Drishti IAS

drishtiias

drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 011-47532596, +91-8130392354, 813039235456